# शारीरिक स्त्राव (म्युकस) द्वारा श्वसन रोगों के विषय में जानकारी

**विषय परिचय** :– मानव शरीर में अनेक प्रकार की ग्रंथियों द्वारा तरल लसलसा चिकना (चैप युक्त) स्त्राव (म्यूकस) का रिसाव होता रहता है। म्यूकस ऊतकों को चिकनाई युक्त रखता है और कीटाणुओं को हटाने में मदद करता है। उपरोक्त स्त्राव श्वसन तंत्र में नाक, मुँह, गला एवं साइनस तथा फेफड़ों के आन्तरिक भाग (ब्रांकिओल्स) तक व्याप्त

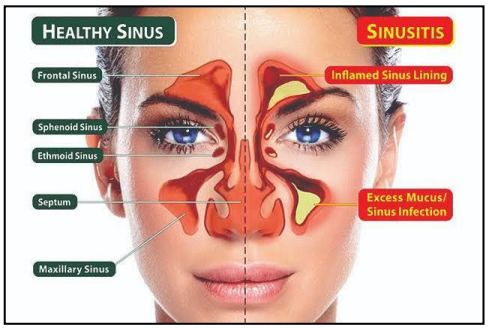


रहता है। इसी प्रकार की ग्रंथियॅा गुदा, स्त्री प्रजनन अंग के अलावा आँख कान तथा पाचन तंत्र में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध रहती है। श्वसन तन्त्र द्वारा उक्त द्रव्य सामान्यतः मुँह द्वारा खॅखार, बलगम तथा नाक द्वारा करीब 0.5–1.5 लीटर की मात्रा में प्रतिदिन प्रवाहित तथा स्वतः पेट में निगल लिया जाता है उसका आभास तक नही होता है। इस आलेख का उद्देश्य असामान्य स्थिति में श्वसन तंत्र द्वारा स्त्रावित म्यूकस का रंग , रूप एवं गंध में परिवर्तन अनेक बीमारियों का कारण हो सकता है कि जानकारी सर्व सामान्य तक प्रसारित करना है। जिससे वे समय रहते चिकित्सक से परामर्श ले सके ।

**स्वस्थ बलगम (म्युकस) का अर्थ** :– स्वस्थ बलगम साफ होता है इसमें पानी, नमक, प्रोटीन तथा एंटीबॅाडी (जीवाणु

को नष्ट करने की क्षमता) युक्त, स्वाद में नमकीन, पारदर्शी एवं छूने में चिकना चिपचिपा होता है। उदाहरण के लिए सर्दी – जुखाम में नाक का बहना, वायरल संक्रमण या एलर्जी का होना, लेकिन यदि सिर में चोट के बाद इस प्रकार का द्रव CSF मस्तिष्क मेरू से रिसाव का एक अत्यन्त गम्भीर मामला भी हो सकता है। इसी प्रकार यदि सामान्य 3 से 5 दिन से अधिक समय तक या मात्रा में बढ़ोतरी, या अन्य परिवर्तन होने पर सावधान होना नितान्त आवश्यक है जो चिकित्सक से मिलने का संकेत है।

**बलगम के रंग मे परिवर्तन** :–

**सफेद बलगम** : – सफेद बलगम अक्सर सर्दी या अन्य सक्रमण के साथ होता है। इससे नाक बन्द हो जाती है। बलगम सूख कर गाढ़ा हो जाता है एवं धुंधला बलगम प्रतिरक्षा में उपस्थित सफेद रक्त कोशिकाओं के द्वारा होता है। उदाहरण के लिए एलर्जी एवं अस्थमा।

**पीला/हरा बलगम** : – यह दर्शाता है कि आपका शरीर संक्रमण से लड़ रहा है। रंग मे बदलाव तब होता है जब सफेद कोशिकाऐं कीटाणुओं से लड़ते लड़ते टूट जाती है उदाहरण के लिए संक्रमण या किसी रोग के कारण सूजन (Inflammation) मुख्य कारण है।

**क्या पीला या हरा बलगम होने पर एंटीबायोटिक जरूरी है ?** जरूरी नही। डॅाक्टर एहतियात तौर पर एंटीबायोटिक दे सकते है पर एंटीबायोटिक वायरस को कम नही करती है। अतः तुंरत डा. की सलाह अवश्य लेवे ।

**गुलाबी या लाल बलगम** : – गुलाबी या लाल बलगम का मतलब खाँसी में खून आना। चोट या नाक मे उंगली डालने से भी आ सकता है। सूखे मौसम या उँचाई वाले पहाड़ी स्थानो पर खून आना सामान्य है। बलगम में खून आना

किसी गम्भीर बीमारी की उपस्थिति का संकेत हो सकता है। उदाहरण के लिए : – टी. बी. , फेफड़ो का कैंसर इत्यादि।

**काला बलगम** : – काला बलगम दुर्लभ होता है इसमें साइनस या फेफड़ो में फंगस का संक्रमण एवं इकट्ठा होने की सम्भावना भी हो सकती है। अतः तुंरत डॉक्टर की सलाह अवश्य लेवे ।

**बलगम का गाढा होने पर क्या करे ?**

- पानी का सेवन ज्यादा करे ।
- गर्म पानी की भाप लेवे ।
- नमक के पानी से गरारे करे ।

**दुर्गंध युक्त बलगम** :–

- यह बिगडे हुए जुखाम (Secondary Infection) का कारण हो सकता है।
- फेफडों के अनेक रोग जैसे एब्सेस, ब्रोंकिएक्टेसिस तथा साइनस संक्रमण मुख्य है।

**बलगम का समय अन्तराल** :– यदि बलगम का सामान्य समय से अधिक ( 2 सप्ताह ) तक निरन्तर स्त्राव होता रहता है तब भी डाक्टर की सलाह से निदान एवं उपचार करवाना होता है। संभवतः क्षय रोग हो सकता है।

**डॉक्टर से कब मिलना चाहिए** :– सभी बिन्दुओं पर उपयुक्त जानकारी दी जा चुकी है। तथापि संक्षिप्त मे पुनः प्रेषित है।

1. पीला हरा या काला बलगम हो ।
2. सॉंस लेने में कठिनाई हो।
3. शरीर का तापमान 102 F से ज्यादा हो।
4. सीने मे दर्द या दबाव हो।
5. बेहोशी जैसा लगता हो।
6. गर्दन या जबड़े में अकड़न हो।
7. चेहरे या साइनस में दर्द हो।

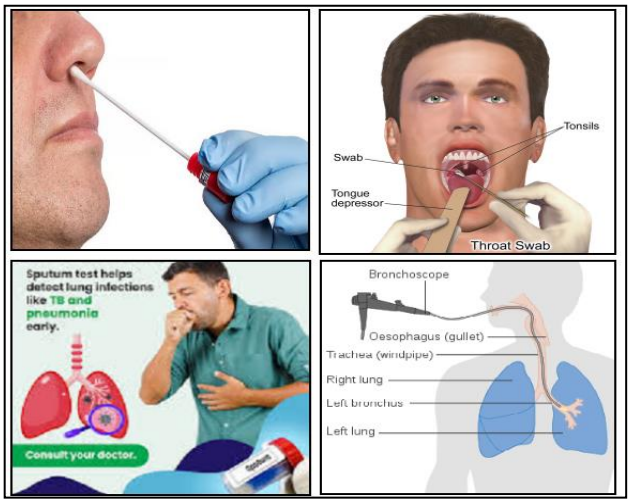


**किटाणू हेतू जॉच** :– सामान्य जॉच के साथ ही डाक्टर द्वारा नाक, मुॅह (स्वाब द्वारा) तथा खॅखार सें म्युकस सेम्पल में किटाणुओं की उपस्थिति की जॉच दूरबीन द्वारा (ब्रोंकोस्कोपी ) भी की जाती है। जिससे रोग के उपचार में सहायता मिलती है ऊपर दिए चित्र में दर्शाया गया है ।

***अधिक जानकारी हेतू सम्पर्क करे : –***

***डॉ. अनिल बड़ाल एम. डी.*** *असिस्टेंट प्रोफेसर* ***श्वसन रोग विभाग***

***OPD रूम न. 101 प्रतिदिन*** *सुबह* ***10 बजे से शाम 04 बजे तक।***

***मो. न. : – दिलिप शर्मा – 7987548806 ,***

***महेन्द्र सिंह झाला – 8964094354***